2 मंत्र

पाठ-परिचय

प्रस्तुत **कहानी** में लेखक ने बताया है कि व्यक्ति को हमेशा निःस्वार्थ भाव से परोपकार करने के लिए तत्पर रहना चाहिए तथा उचित समय आने पर उसे कार्यान्वित करना चाहिए।

संध्या का समय था। डॉक्टर चड्ढा गोल्फ खेलने के लिए तैयार हो रहे थे। मोटर द्वार के सामने खड़ी थी कि दो कहार एक डोली लिए आते दिखाई दिए। डोली के पीछे एक बूढ़ा लाठी टेकता चल रहा था। डोली द्वार के सामने आकर रुक गई।

डॉक्टर साहब ने द्वार से ही गरजकर पूछा, "कौन हो? क्या चाहते हो?" बूढ़े ने हाथ जोड़कर कहा, "हुज़ूर, बड़ा ग़रीब आदमी हूँ। मेरा लड़का कई दिन से...।"

डॉक्टर साहब ने सिगरेट जलाकर कहा, "कल सवेरे आना, हम इस वक्त मरीज़ों को नहीं देखते।" बूढ़े ने घुटने टेककर ज़मीन पर सिर रख दिया और बोला, "दुहाई है सरकार की, लड़का मर जाएगा। इसने हुज़ूर, चार दिन से आँखें नहीं...।"

डॉक्टर चड्ढा ने घड़ी पर नज़र डाली और बोले, "कह दिया न कि कल आना। इस वक्त मेरे पास टाइम नहीं है।"

बूढ़े ने पगड़ी उतारकर चौखट पर रख दी और गिडगिड़ाकर बोला, "हुज़ूर! बस एक नज़र देख लें। लड़का हाथ से चला जाएगा। हुज़ूर, छह लड़कों में बस यही एक बचा है। इसकी जान बचा लो सरकार।" डॉक्टर साहब ने अपने मन में कहा, "ऐसे उजड्ड देहाती यहाँ रोज़ आया करते हैं। कोई कुछ भी कहे, वे अपनी रट लगाते रहेंगे। किसी की सुनेंगे नहीं।" वे बाहर निकलकर मोटर की तरफ़ चले। बूढ़ा यह कहता हुआ उनके पीछे दौड़ा, "सरकार बड़ा धरम होगा! हुज़ूर, दया कीजिए, बड़ा दीन-दुखी हूँ, संसार में कोई नहीं है, बस यही लड़का सहारा है।"

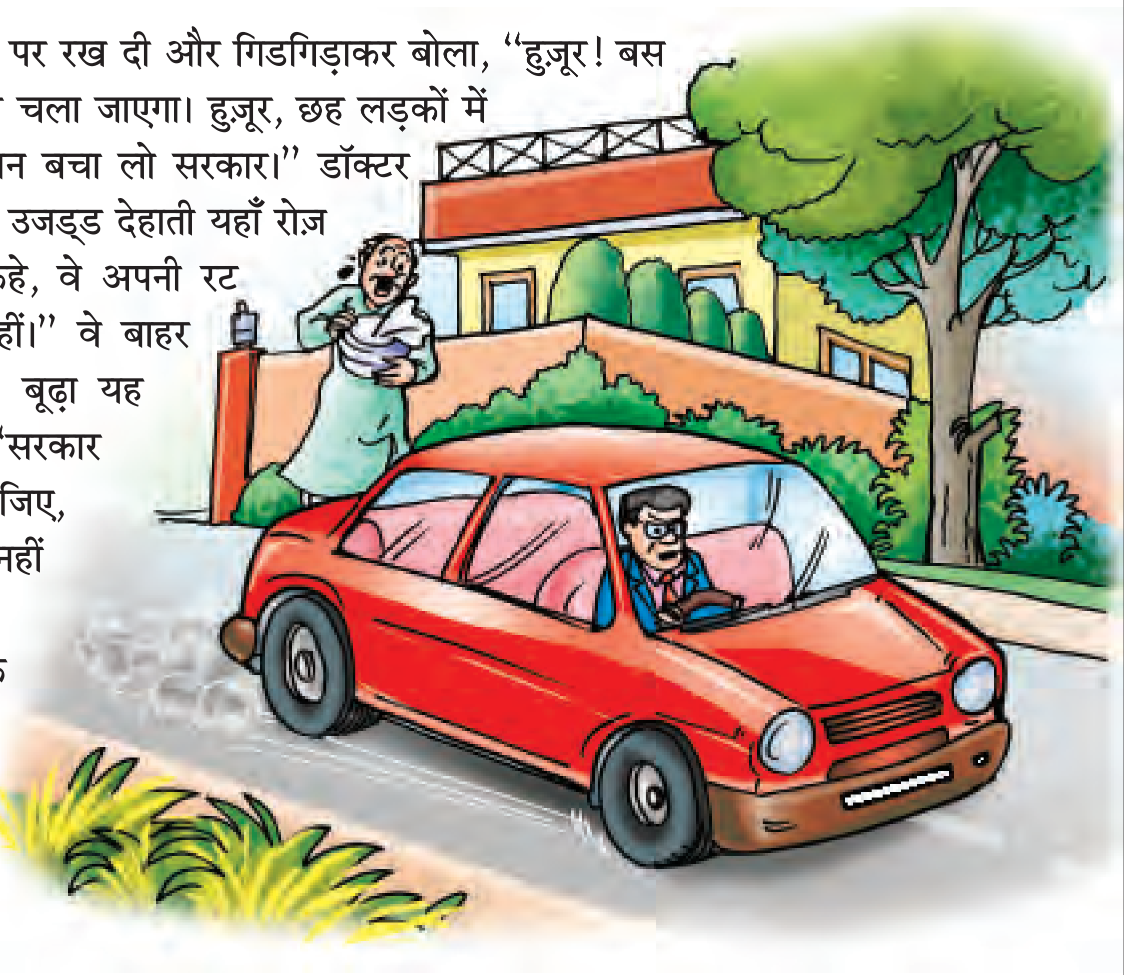

डॉक्टर साहब ने उसकी तरफ़ से मुँह फेरकर देखा भी नहीं। मोटर में बैठकर बोले, "कह दिया न कि कल आना।"

मोटर चली गई। बूढ़ा कई मिनट तक मूर्ति की भाँति निश्चल खड़ा रहा। संसार में ऐसे भी मनुष्य होते हैं, जो अपने मज़े के आगे किसी की जान की भी परवाह नहीं करते। कोई मनुष्य इतना कठोर हो सकता है, यह विश्वास भी नहीं होता। वह पुराने ज़माने के उन जीवों में था, जो लगी हुई आग को बुझाने, मुर्दे को कंधा देने, किसी के छप्पर को उठाने और किसी कलह को शांत करने के लिए सदा तैयार रहते थे। जब तक बूढ़े को मोटर दिखाई दी, वह खड़ा टकटकी लगाए उसी ओर देखता रहा। शायद उसे अब भी डॉक्टर साहब के लौट आने की आशा थी। फिर उसने कहारों को डोली उठाने को कहा। डोली जिधर से आई थी, उधर ही चली गई। चारों ओर से निराश होकर डॉक्टर चड्ढा के पास आया था। इनकी बड़ी तारीफ़ सुनी थी। यहाँ से निराश होकर वह फिर किसी दूसरे डॉक्टर के पास नहीं गया। सोच लिया कि किस्मत में लिखा ही नहीं।

उसी रात को उसका हँसता-खेलता सात साल का बालक इस संसार से चल बसा। बूढ़े बाप के जीवन का बस एक यही आधार था। इस दीपक के बुझते ही जीवन की अँधेरी रात भाँय-भाँय करने लगी। कई साल बीत गए। डॉक्टर चड्ढा ने खूब यश और धन कमाया। उनका हर काम नियम से होता था, इसलिए स्वास्थ्य भी अच्छा था। पचास साल की उम्र में भी जवानों के कान काटते थे। उनके केवल दो बच्चे थे। बेटी ब्याही जा चुकी थी और बेटा बीस साल का हुआ था। उसी की सालगिरह की पार्टी थी। शहर के रईस और कॉलेज के छात्र आए हुए थे। डॉक्टर साहब का बेटा कैलाश एक रेशमी कमीज़ पहने नंगे सिर, नंगे पाँव मेहमानों की देखभाल में लगा था। अचानक मृणालिनी ने कहा, "क्यों कैलाश, तुम्हारे साँप कहाँ हैं? ज़रा मुझे दिखा दो।"

कैलाश ने कहा, "मृणालिनी, इस वक्त क्षमा करो, कल दिखा दूँगा।"

मृणालिनी ने आग्रह किया, "जी नहीं, तुम्हें दिखलाना पड़ेगा, मैं आज नहीं मानूँगी। तुम रोज़ 'कल-कल' करते हो।"

मृणालिनी और कैलाश सहपाठी थे। कैलाश को साँपों को पालने, उनकी आदतों का अध्ययन करने का शौक था। यह विद्या उसने एक सपेरे से सीखी थी। साँपों की जड़ी-बूटियाँ जमा करने का भी उसे मरज़ था। मृणालिनी के ज़िद करने पर एक महाशय ने कहा, "दिखा क्यों नहीं देते, ज़रा-सी बात के लिए टाल-मटोल कर रहे हो।"

कैलाश ने जोश में आकर कहा, "कौन कहता है कि मैं दिखाना नहीं चाहता। आप लोग तैयार हो जाएँ।" वह साँपों के पिटारों के पास गया और बीन बजानी शुरू कर दी।

फिर एक-एक पिटारे से साँप को निकालना शुरू किया और अपनी गरदन में लपेटने लगा। एक मित्र ने छेड़ा—"दाँत तोड़ डाले होंगे।" कैलाश हँसकर बोला, "इनके दाँत नहीं तोड़े गए हैं।" यह कहकर एक काले साँप को पकड़कर बोला, "मेरे पास इससे ज़हरीला साँप नहीं है, अगर किसी को डस ले तो देखते-ही-देखते दम निकल जाएगा।" ऐसा कहते ही उसने साँप की गरदन पकड़कर ज़ोर से दबाई। इतनी ज़ोर से कि उसका मुँह खुल गया और दाँत दिखाते हुए बोला, "जिन लोगों को शक हो नज़दीक आकर इसके दाँत देख लें।"

जैसे ही कैलाश ने साँप पर से हाथ ढीला किया, साँप ने उसे डस लिया। वह उस कमरे की तरफ़ भागा जहाँ मेज़ की दराज़ में जड़ी-बूटियाँ रखी हुई थीं। उसके विचार से जिसे पीसकर लगाने से ज़हर का असर खत्म हो जाएगा। महफ़िल में भगदड़ मच गई। डॉक्टर चाहते थे कि उँगली काट दी जाए, पर कैलाश न माना। उसे जड़ी-बूटी पर पूरा विश्वास था, लेकिन ज़हर ने अपना रंग दिखाया। धीरे-धीरे उसके होंठ नीले पड़ने लगे और वह अचेत हो गया।

एक महाशय बोले, "कोई मंत्र झाड़नेवाला मिले तो संभव है, जान बच जाए।" एक महाशय बुला भी लाए, लेकिन उसने आते ही कहा, "अब कोई फ़ायदा नहीं।"

शहर से कई मील दूर एक झोंपड़ी में एक बूढ़ा और एक बुढ़िया जाड़े की रात काट रहे थे। इतने में किसी ने द्वार पर दस्तक दी, "भगत, क्या सो गए? ज़रा किवाड़ तो खोलो।"

किवाड़ खुलते ही आदमी ने अंदर आकर कहा, "डॉक्टर चड्ढा के लड़के को साँप ने डस लिया है।" भगत ने चौंककर पूछा, "डॉक्टर चड्ढा के लड़के को! वही डॉक्टर चड्ढा न, जो छावनी के पास वाले बंगले में रहते हैं?" आदमी ने कहा, "हाँ-हाँ वही। देखने जाओगे?"

बूढ़े ने कठोर भाव से कहा, "मैं नहीं जाता। डॉक्टर चड्ढा को खूब जानता हूँ। मुन्ना को उन्हीं के पास ले गया था। खेलने जा रहे थे, सीधे मुँह बात तक नहीं की थी। भगवान सब कुछ देखता है। उस बख़्त मेरी आँखों से आँसू निकल पड़े थे। अपने खेल के पीछे उस पत्थर दिल ने मेरे मुन्ना को देखा तक नहीं।"

भगत के जीवन का यह पहला अवसर था, जब किसी को साँप ने काटा हो और वह चुपचाप बैठा रहा हो। पर आज ऐसी ख़बर सुनकर भी वह घर से कदम नहीं निकाल सका। सोने की कोशिश करने लगा, पर नींद कहाँ। चुपके से उठा, लाठी उठाई और किवाड़ खोलकर बाहर निकल गया। चौकीदार ने पूछा, "कहाँ चले भाई।" भगत ने कहा, "जाऊँगा कहाँ, देख रहा था कि रात कितनी बाकी है।" चौकीदार ने कहा, "डॉक्टर चड्ढा के बेटे का हाल तुमने सुना ही है। तुम क्यों नहीं चले जाते? सुना है, दस हज़ार देने का वादा किया है।"

भगत, "मैं तो नहीं जाऊँगा, चाहे वह दस लाख भी दें। मुझे लेकर करना क्या है? कल मर जाऊँगा तो फिर कौन भोगने वाला बैठा है।"

चौकीदार चला गया। भगत लाठी खट-खट करता हुआ आगे बढ़ने लगा। दिमाग कहता था मत जाओ, पर अंदर की आवाज़ आगे ठेलती थी।

इतने में दो आदमी आते दिखाई दिए। दोनों बातें करते चले आ रहे थे, "चड्ढा बाबू का घर उजड़ गया, बेचारे का एक ही बेटा था।" भगत के कानों में इस आवाज़ के पड़ते ही उसकी चाल तेज़ हो गई, सामने डॉक्टर साहब का बँगला नज़र आया। बिजली की बत्तियाँ जल रही थीं, अंदर से रोने-पीटने की आवाज़ आ

रही थी। भगत का कलेजा धक्-धक् करने लगा, कहीं मुझे आने में देर तो नहीं हो गई। दो बज चुके थे। लोग सुबह का इंतज़ार कर रहे थे।

सहसा भगत ने द्वार पर पहुँचकर आवाज़ दी। डॉक्टर साहब समझे, कोई मरीज़ होगा। कोई और दिन होता तो दुत्कार देते, पर आज नम्रता से बोले, "क्या है भाई! आज हमारे ऊपर बड़ी मुसीबत आई है, शायद एक महीने तक किसी मरीज़ को न देख सकूँगा।"

भगत ने कहा, "आप की मुसीबत सुन चुका हूँ। भैया कहाँ हैं? मुझे दिखा दीजिए। भगवान बड़ा कारसाज़ है, कौन जाने, अब भी उसे दया आ जाए।"

चड्ढा ने उदास स्वर से कहा, "चलो, देख लो। बहुत से झाड़-फूँकवाले देखकर जा चुके हैं।" भगत अंदर जाकर डॉक्टर के बेटे को देखकर बोला, "अभी देर नहीं हुई है। नारायण चाहेंगे तो आधे घंटे में भैया उठ बैठेंगे।"

कहारों ने पानी भर-भरकर कैलाश के ऊपर डालना शुरू किया। बूढ़ा भगत मंत्र पढ़ रहा था। मंत्र खत्म होते ही बीच-बीच में जड़ी कैलाश को सुँघा देता था। इस तरह न जाने कितने घड़े पानी के डाले गए और हर बार मंत्र फूँकते हुए भगत ने उसे जड़ी सुँघाई। आखिर जब उषा की लाल-लाल आँखें खुली तो कैलाश ने भी आँखें खोल दीं और पानी पीने को माँगा।

कैलाश की माँ दौड़कर भगत के पैरों में गिर पड़ी। डॉक्टर साहब बड़े श्रद्धा भाव से भगत को देखते हुए, उसका यश गाते हुए फिर रहे थे। पर भगत का कहीं पता न था। नौकरों ने कहा, "अभी तो यहीं बैठे चिलम पी रहे थे। हमने तमाखू दिया तो नहीं लिया, अपने पास से तमाखू निकालकर चिलम भरी।"

यहाँ तो भगत की चारों ओर तलाश होने लगी और वहाँ भगत लंबे-लंबे डग भरता हुआ बुढ़िया के उठने से पहले घर पहुँचना चाहता था। जब मेहमान चले गए, तो डॉक्टर ने नारायणी से कहा, "बुड्ढा न जाने कहाँ चला गया। एक चिलम तमाखू भी न लिया।" नारायणी बोली, "मैंने सोचा था कि इसे कोई बड़ी रकम दूँगी।"

चड्ढा ने कहा, "रात को मैंने उसे नहीं पहचाना, पर दिन निकलते ही मैं उसे पहचान गया था। एक बार यह एक मरीज़ को लेकर आया था। मैं खेलने जा रहा था और मैंने मरीज़ को देखने से इनकार कर दिया था। आज शर्म आ रही है। उसे खोज़कर उसके पैरों पर गिरकर अपने अपराध के लिए क्षमा मागूँगा। वह कुछ लेगा नहीं, यह मैं जानता हूँ। उसका जन्म यश की वर्षा करने के लिए हुआ है। इस सज्जनता ने मुझे ऐसा आदर्श दिया है, जो अब से जीवन भर मेरे सामने रहेगा।"

–मुंशी प्रेमचंद

जीवन-परिचय

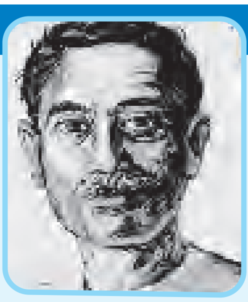

मुंशी प्रेमचंद
(1880-1936)

मुंशी प्रेमचंद जी का जन्म 31 जुलाई, 1880 को वाराणसी जिले के 'लमही' नामक ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम अजायब राय और माता का नाम आनंदी देवी था।

साहित्यिक जीवन में प्रवेश करने पर सर्वप्रथम ये 'मर्यादा' पत्रिका के संपादक हुए। उपन्यास और कहानी के क्षेत्र में प्रेमचंद जी ने प्रत्येक वर्ग के पाठक को मंत्र-मुग्ध कर देने वाले साहित्य का सृजन किया, इसीलिए इन्हें 'उपन्यास-सम्राट' की उपाधि प्राप्त है। सन् 1936 ई० में लंबी बीमारी के बाद इनका देहांत हो गया।

'सेवासदन', 'निर्मला', 'रंगभूमि', कर्मभूमि', 'गबन', 'गोदान', 'मानसरोवर', 'मंत्र', 'प्रेम की वेदी' आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

शब्द-संपदा

देहाती = गाँव में रहने वाला। **उजड्ड** = गँवार। **दीन** = ग़रीब। **निश्चल** = बिना हिले, स्थिर। **टकटकी** = बिना पलक झपकाए।। **रईस** = अमीर। **सालगिरह** = जन्मदिन। **अचानक** = एकदम। **दस्तक** = दरवाज़ा खटखटाना। **पत्थर दिल** = कठोर हृदय। **चाल** = चलने की गति। **उषा** = सुबह। **अचेत** = बेहोश। **ठेलना** = धकेलना। **तमाखू** = तंबाकू।

अभ्यास प्रश्न

कहानी से ....

1. दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर के सामने ✓ लगाइए :

क. बूढ़ा व्यक्ति डॉक्टर चड्ढा के पास किस उद्देश्य से आया था?

(i) अपना इलाज़ कराने के लिए। ☐ (ii) अपने बीमार लड़के का इलाज़ कराने के लिए। ☐

(iii) नौकरी की बातचीत करने के लिए। ☐ (iv) अपनी बीमार पत्नी का हाल बताने के लिए। ☐

ख. डॉक्टर चड्ढा ने बूढ़े के पुत्र को देखने से क्यों मना कर दिया था?

(i) क्योंकि उस समय डॉक्टर साहब के खेलने जाने का समय हो गया था। ☐

(ii) क्योंकि उस समय डॉक्टर साहब के घर कुछ मेहमान आ गए थे। ☐

(iii) क्योंकि उस समय डॉक्टर साहब इमरजेंसी केस देखने जा रहे थे। ☐

(iv) क्योंकि उस समय डॉक्टर साहब को थकान बहुत हो रही थी और वह आराम करने जा रहे थे। ☐

ग. मृणालिनी कैलाश से किस काम को करने की ज़िद करने लगी?

(i) बाहर घूमने जाने की। ☐ (ii) अपनी बागवानी दिखाने की। ☐

(iii) अपने पिता का क्लीनिक दिखाने की। ☐ (iv) साँपों का खेल दिखाने की। ☐

घ. साँप द्वारा काटे जाने पर डॉक्टर चड्ढा क्या करना चाहते थे?

(i) वह उसे एक अच्छे डॉक्टर के पास ले जाना चाहते थे। ☐

(ii) वह उसे इंजेक्शन देना चाहते थे और दवा पिलाना चाहते थे। ☐

(iii) वह उस उँगली को काट देना चाहते थे जिसमें साँप ने काटा था। ☐

(iv) वह उसे झाड़-फूँकवाले व्यक्ति के पास ले जाना चाहते थे। ☐

2. दिए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

क. बूढ़े व्यक्ति ने डॉक्टर चड्ढा के आगे पगड़ी उतारकर क्यों रख दी?

ख. डॉक्टर साहब ने पार्टी किस उद्देश्य से रखी थी?

ग. काले साँप को हाथ में लेकर कैलाश ने क्या किया?

घ. 'चड्ढा बाबू का घर उजड़ गया'—यह सुनते ही भगत तेज़ कदमों से क्यों चलने लगा?

ङ. लेखक ने इस कहानी को 'मंत्र' नाम दिया है। यदि आप होते तो क्या नाम रखते?

3. विचार कौशल :

क. साँप के काटे जाने पर सबसे पहले क्या करना चाहिए? अपने बड़ों से विचार-विमर्श कर लिखिए।

ख. कहानी में भगत मंत्रों की सहायता से डॉक्टर चड्ढा के पुत्र को ठीक कर देता है। आज के वैज्ञानिक युग में क्या यह बात सही हो सकती है? अपने अध्यापक/अध्यापिका से इस विषय पर बातचीत कीजिए।

ग. आपके विचार में डॉक्टर साहब या भगत में किसका व्यक्तित्व अधिक प्रभावशाली है और क्यों? आप इनमें से अपना जीवन आदर्श किसे मानेंगे?

4. किसने, किससे कहा?

क. "हुज़ूर! बस एक नज़र देख लें। लड़का हाथ से चला जाएगा। हुज़ूर, छह लड़कों में बस यही एक बचा है। इसकी जान बचा लो सरकार!" ________

ख. "ऐसे उजड्ड देहाती यहाँ रोज़ आया करते हैं।" ________

ग. "उस बख़्त मेरी आँखों से आँसू निकल पड़े थे। अपने खेल के पीछे उस पत्थर दिल ने मेरे मुन्ना को देखा तक नहीं।" ________

घ. "भगवान बड़ा कारसाज़ है, कौन जाने, अब भी उसे दया आ जाए।" ________

ङ. "अभी देर नहीं हुई है। नारायण चाहेंगे तो आधे घंटे में भैया उठ बैठेंगे।" ________

भाषा से........

1. पाठ में प्रयुक्त विदेशी शब्द छाँटकर लिखिए :

अंग्रेज़ी शब्द — ________ ________ ________ ________ ________

अरबी-फ़ारसी — ________ ________ ________ ________ ________

2. विलोम शब्द लिखिए :

ग़रीब × ________	बूढ़ा × ________	पास × ________	देहाती × ________
सहारा × ________	अंधकार × ________	शांत × ________	निराशा × ________

3. समान अर्थ वाले शब्द लिखिए :

दस्तक ________	किवाड़ ________	फ़ायदा ________	ख़बर ________
इंतज़ार ________	कारसाज़ ________	डग ________	मरीज़ ________

4. शुद्ध रूप लिखिए :

बखत ________	भगत ________	धरम ________	वादा ________
तमाखू ________	बुड्डा ________	डाकदर ________	महफील ________

5. दिए मुहावरों के अर्थ लिखकर अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

घुटने टेकना	रट लगाना	मुँह फेरना	दीपक बुझना	टाल-मटोल करना
दाँत दिखाना	भगदड़ मचना	सीधे मुँह बात न करना	पत्थर दिल होना	
घर उजड़ना	कलेजा धक्-धक् करना	घड़ों पानी पड़ जाना		

6. वाक्यों में आए प्रश्नवाचक सर्वनाम छाँटकर लिखिए :

क. डॉक्टर चड्ढा कौन थे? ________

ख. मृणालिनी ने क्या देखने की ज़िद की? ________

ग. किसकी सालगिरह की पार्टी थी? ________

घ. डॉ० चड्ढा के बेटे को किसने डसा था? ________

रचनात्मक गतिविधियाँ

1. इस कहानी से मिलने वाली शिक्षा लिखिए।
2. मुंशी प्रेमचंद की कोई अन्य कहानी पढ़िए और उस पर चिंतन कर सार अपने शब्दों में लिखिए।
3. डॉक्टर-मरीज़ में संवाद अपने शब्दों में लिखिए।